बी.एस.के.एफ-001

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2010 एवं जनवरी 2011 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड :बी.एस.के.एफ.-001
संस्कृत में आधार पाठ्यक्रम

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110 068

संस्कृत में आधार पाठ्यक्रम-001
सत्रीय कार्य 2010-11

कार्यक्रम कोड : बी.डी.पी
पाठ्यक्रम कोड :बी.एस.के.एफ-001

प्रिय छात्र/छात्राओ,

संस्कृत में आधार पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। इसके लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह पाठ्यक्रम कुल 4 क्रेडिट का है। यह सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित है।

उद्देश्य : अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। इस पाठ्यक्रम में संस्कृत भाषा और साहित्य के विविध पक्षों से आपको परिचित कराया गया है। इस अध्ययन से आप संस्कृत भाषा और साहित्य के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इसके अलावा इस पाठ्यक्रम में संस्कृति, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान तथा मानविकी से संबंधित पाठों के माध्यम से संस्कृत का व्यावहारिक ज्ञान कराया गया है। इसके साथ ही संस्कृत में वार्तालाप, अनुवाद, संक्षेपण, पल्लवन, निबंध, समाचार तथा पत्र-लेखन को भी समझाने का प्रयास किया गया है। सत्रीय कार्य से आप यह जाँच सकेंगे कि आपने पाठ्यक्रम में प्रस्तुत सामग्री को कितना समझा है।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) आधार पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए हुए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और उस अध्ययन केंद्र का नाम लिखिए जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक :.....

नाम :.....

पता :.....

.....

दिनांक :.....

पाठ्यक्रम शीर्षक :.....

सत्रीय कार्य कोड :.....

अध्ययन केंद्र का नाम :.....

---

4) उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।

5) प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।

7) सत्रीय कार्य की उत्तर पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के संचालक (Coordinator) के पास भेज दें।

सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि :

जुलाई 2010 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए	:	**31 मार्च, 2011**
जनवरी 2011 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए	:	**30 सितंबर, 2011**

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 350-400 शब्दों में लिखने हैं तथा लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 150-200 शब्दों में देने हैं। इसके अलावा, तीसरी श्रेणी के प्रश्न के उत्तर निर्देशानुसार देने हैं।

उत्तर देने के लिए अगर आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास :** अपने उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

घ) उत्तर, प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और

ड.) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3) **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

संस्कृत में आधार पाठ्यक्रम-001
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : बी.डी.पी
पाठ्यक्रम कोड : बी.एस.के.एफ-001
सत्रीय कार्य कोड : बी.एस.के.एफ-001/टीएमए/2010-11
पूर्णांक : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. निम्नलिखित शब्दरूप एवं धातुरूप लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 10

   क) गुरु — द्वितीया एकवचन
   ख) पितृ -- पंचमी बहुवचन
   ग) नदी -- सप्तमी बहुवचन
   घ) गृह -- षष्ठी एकवचन
   ङ) विद्वस् -- तृतीया द्विवचन
   च) गम् — लृट् लकार, प्रथम पुरुष. एकवचन
   छ) लिख् -- लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
   ज) कृ -- लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन
   झ) क्रुध् — लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
   ञ) चल् -- विधिलिङ्, मध्यम पुरुष, द्विवचन

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100-125 शब्दों में दीजिएः 5×5=25

   क) शुद्धोच्चारण की आवश्यकता क्यों है?
   ख) संस्कृत भाषा की सम्पन्नता पर प्रकाश डालिए।
   ग) संस्कृत धातुएँ कितने गणों में विभाजित हैं? उनके नाम बताइए।
   घ) नचिकेतोपाख्यान का वर्णन कीजिए।
   ङ) संस्कृत काव्य के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

3. 'आयुर्वेद की उत्पत्ति' विषय पर लगभग 100-125 शब्दों में लेख लिखिए। 5

4. संस्कृत में अर्थ की दृष्टि से जितने तरह के वाक्य लिखे जा सकते हैं, उन्हें लगभग 200-250 शब्दों में सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 10

5. निम्नलिखित गद्यांश की लगभग 200-250 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिएः 10
   न विशेषज्ञतां विचारयति। नाचारं पालयति। न सत्यमवबुध्यते। न लक्षणं प्रमाणीकरोति।
   गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति।

6. हितोपदेश के मित्रलाभ परिच्छेद में वर्णित कपोतराज चित्रग्रीव की कथा और उसमें प्राप्त नीतिशास्त्रोपदेश को संक्षेप मे लिखिए। 10

7. 'औपचारिक पत्र की शैली कैसी होती है?' लगभग 100-125 शब्दों में प्रकाश डालिए। 5

8. 'न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्।' सूक्ति का **संस्कृत** भाषा में लगभग 50-60 शब्दों में पल्लवन कीजिए। 5

9. 'भारतीय-संस्कृतेः स्वरूपम्' विषय पर **संस्कृत** में निबंध लिखिए। 5

10. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कीजिए : 5

क) मित्रद्वयं पठतः।

ख) इमं भोजनम् आस्वादय।

ग) आरमते उपवने।

घ) अहं हंसां पश्यामि।

ङ) तेन गृहं दृष्टः।

11. निम्नलिखित वाक्यों का **संस्कृत** में अनुवाद कीजिए : 5

क) वृक्ष से पीला पत्ता गिरा।

ख) वे नाटक देखने जाएँगे।

ग) अतिथि लोग कल घर लौट गए।

घ) हम दोनों उद्यान में खेलते हैं।

ङ) छात्राएँ लिखकर याद करती हैं।

12. निम्नलिखित वाक्यों का वाच्य-परिवर्तन कीजिए : 5

क) बालकः अभ्यासाय मित्रगृहं गच्छति।

ख) श्रमशीलः कृषकः भूमिं कर्षति।

ग) ते छात्राः उत्तीर्णाः भवन्ति।

घ) मोहनेन हस्यते।

ङ) बालिका चलचित्रं पश्यति।

SOH/IGNOU/P.O.1T/May, 2010
Printed at : Sita Fine Arts Pvt. Ltd., New Delhi-28